DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

MODERN HISTORY

Congress

Part -3

LIVE 09-07-2024 04:00 PM

1857 क्रान्ति

↓

कांग्रेस

- पूर्ववर्ती संगठन
- कांग्रेस
  - स्थापना
  - विचारधारा
  - सेफ्टी वाल्व सिद्धान्त
  - महत्वपूर्ण अधिवेशन
  - नेतृत्वकर्ता

→ बंगभंग आंदोलन

स्वदेशी आंदोलन

↓

मार्ले मिंटो सुधार

(दिल्ली दरबार)

1909 का भारत परिषद अधिनियम

→ वायसराय

भारत राज्य सचिव

मार्ले मिंटो सुधार एवं दिल्ली दरबार

मार्ले-मिंटो सुधार अधिनियम-

⇒ मार्ले-मिंटो सुधार अधिनियम 1909 ई॰ में पारित किया गया था। 1891 के अधिनियम की भांति इसे भी 'भारतीय परिषद अधिनियम' कहा गया।

⇒ इसके द्वारा पहली बार प्रतिनिधिक और निर्वाचित तत्व का समावेश करने का प्रयास किया गया।

⇒ केन्द्र तथा प्रांतीय विधान परिषदों के कार्यों व शक्तियों का भी विस्तार किया गया।

⇒ सदस्य बजट पर बहस कर सकते थे, परन्तु बजट पर मतदान नहीं कर सकते थे।

⇒ पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार था, परन्तु पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार केवल प्रश्नकर्ता सदस्य को ही था, अन्य सदस्यों को नहीं।

नोट - सरकार इन प्रस्तावों को मानने के लिये बाध्य नहीं थी चाहे वह प्रस्ताव जनता के लिए हो या वित्तीय विवरण के लिए।

⇒ इस अधिनियम के द्वारा भारत सचिव की परिषद तथा भारत के गवर्नर जनरल के कार्यकारी परिषद में सर्वप्रथम 2 भारतीय सदस्यों को शामिल किया गया।

① के॰ सी॰ गुप्ता
② सैय्यद हुसैन बिलग्रामी

⇒ सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा वायसराय की कार्यकारिणी के विधि सदस्य रूप में नियुक्त किए गए।

⇒ पहली बार मुस्लिमों के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली लागू कर दी गयी। चुनाव क्षेत्र, मतदाता, उम्मीदवार को धर्म के आधार पर बांटना था।

⇒ मुस्लिम मतदाता ही मुस्लिम उम्मीदवार को वोट कर सकता है।

Statement:

① के॰एम॰ मुंशी - इसने उभरते हुये प्रजातंत्र को जान से मार डाला।
② महात्मा गांधी - मार्ले-मिंटो सुधारों ने हमारा सर्वनाश कर दिया।
③ जवाहरलाल नेहरू - मुसलमानों के इर्द-गिर्द राजनीति की एक बाढ़ सी ला दी गई, और उनको शेष भारत से अलग कर दिया गया। इस प्रकार सदियों से चली आ रही एकता व मिलन उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया को भी पलटकर रख दिया गया।

Divijay GS

⇒ अन्य धर्म के लोगों ने भी इन अधिकारों की मांग की।
⇒ 1919 के भारत सरकार अधिनियम से सिक्खों को विशेष प्रतिनिधित्व प्रदान कर दिया गया।
⇒ इसी प्रकार हरिजनों, भारतीय ईसाईयों, यूरोपियनों एवं एंग्लो इंडियनों को 1935 के भारत सरकार अधिनियम के अन्तर्गत पृथक प्रतिनिधित्व प्राप्त हो गया।
⇒ मार्ले मिंटो योजना 1910 में लागू हो गई।

दिल्ली दरबार

⇒ जब इंग्लैण्ड के क्राउन को आधिकारिक रूप से भारत का सम्राट या साम्राज्ञी घोषित किया जाता था, तब इस प्रकार के दरबारों का आयोजन किया जाता था। दिल्ली में आयोजन होने के कारण इन्हें दिल्ली दरबार कहा गया।
⇒ यह एक प्रकार का राज्याभिषेक कार्यक्रम था।
⇒ यह दरबार दिल्ली के जिस **मैदान** में आयोजित होता था, उसे आज 'कोरोनेशन पार्क' कहा जाता है।
⇒ कुल 3 दिल्ली दरबारों का आयोजन हुआ। (1877, 1903, 1911)

① 1877 –
⇒ गवर्नर जनरल – लिटन
⇒ प्रोक्लेमेशन दरबार या घोषणा दरबार
⇒ महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया। (1 जनवरी 1877)
⇒ सभी सम्मानित अतिथियों को महारानी के भारत की साम्राज्ञी बनने की स्मृति में एक पदक भेंट किया गया।
⇒ इस दरबार में गणेश वासुदेव जोशी घर के बने हुए स्वच्छ खादी वस्त्र पहनकर उपस्थित हुए थे।

② 1903 –
⇒ गवर्नर जनरल – कर्जन
⇒ एडवर्ड सप्तम तथा महारानी एलेक्जेंडा के राज्याभिषेक हेतु आयोजित किया गया था।
⇒ लेकिन कर्जन को निराशा हुई, जब एडवर्ड सप्तम ने इस आयोजन में स्वयं न आकर अपने भाई ड्यूक ऑफ कनॉट को भेज दिया।

Dr Vijay Sir GS

③ 1911 -

⇒ गवर्नर जनरल – हार्डिंग

⇒ जार्ज पंचम एवं उनकी पत्नी विलिंगम मेरी के राज्याभिषेक हेतु आयोजित किया गया।

⇒ एकमात्र दरबार जिसमें ब्रिटेन का सम्राट स्वयं उपस्थित था।

⇒ इस दरबार से जार्ज पंचम के द्वारा दो महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई।

1) 16 अक्टूबर 1905 - बंगाल विभाजन की घोषणा को रद्द किए जाने की बात की गयी।

Note- इस दरबार में न केवल बंगाल विभाजन की घोषणा को रद्द किया गया बल्कि बंगाल का भाषाई आधार पर पुनर्गठन भी किया गया। बिहार और उड़ीसा को बंगाल से अलग कर दिया गया और असम के लिए भी एक अलग से कमिश्नरी की नियुक्ति की घोषणा की गई।

2) इसी दरबार में ब्रिटिश सरकार के द्वारा भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित किए जाने की घोषणा 12 दिसम्बर 1911 ई० को की गई। 1912 में दिल्ली भारत की राजधानी बनी। नई दिल्ली भारत की राजधानी 9 फरवरी 1931 को इरविन के समय में बनी।

Digvijay Singh

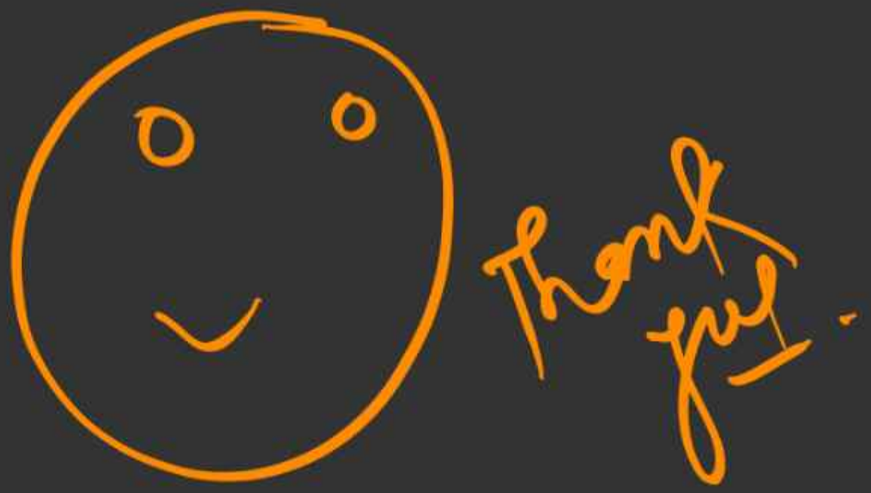
Thank you.